International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS) Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
प्ैैछ;वद्धरू 2249.7382 द्य प्उचंबज थ्ंबजवतरू 6.939 द्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Email:- editorijrim@gmail.com, http://www.euroasiapub.org (An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

211

बौद्ध एवं जैन वांड्मय में अर्द्धदेवोपासना

संस्कृत विभाग, असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
भवानी प्रसाद पाण्डेय महिला महाविद्यालय, करीमनगर, गोरखपुर।

बुद्ध के आगमन के पूर्व ही लोक में यक्ष पूजा व्याप्त थी। जैसा कि वैदिक ग्रन्थों, दा े महाकाव्यों आदि से ज्ञात होता है। बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेने के पष्चात् भी गृहस्थ और सामान्य लोगों में यक्ष-यक्षियों की मान्यता बनी रही। यक्षों को महिद्विक अर्थात् बहुत ऋद्धि

मिलती है। उल्लेखनीय है कि पालि ग्रन्थों के यक्ष जो बौद्ध धार्मिक परम्परा के थे, महाभारत

वर्णन प्राप्त होता है। उसके अनुसार राजा वैश्रवण स्वयं बुद्ध से कहते हैं कि प्रायः यक्ष लोग बुद्ध और उनके धर्म को नही मानते हैं। बुद्ध के उपदेष लोगों को अनेक प्रकार के पापों से बचने का अग्रह करते हैं। यक्षों को वह प्रिय नही है। कुछ यक्ष बुद्ध के षि्

अंकुष रखते हैं। बुरे यक्षों के प्रभाव से बचने के लिए एवं वैश्रवण मंत्र का भी संकेत किया गया है।

”

युक्त अर्द्धदेव माना गया है। अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार के यक्ष होते थे। कुछ प्राचीन बौद्ध ग्रन्थों में यक्ख के लिए बलि का विधान बताया गया है। उन्हें मांस-भक्षी कहा गया है।

ं

बौद्ध धर्म का व्यापक क्षितिज था, उनमें सर्वत्र यक्ष-पूजा प्रचलित थी। कुछ यक्षों के नाम

वस्तुतः यक्ष-पूजा में जैन, बौद्ध एवं ब्राह्मण धर्मों के सम्मिश्रण से बनी लोक परम्परा प्रधान थी। इस सूची में कितने नाम वास्तविक है, यह कहना कठिन हैं किन्तु कुरुक्षेत्र के तरार्क, कुतरार्क और अलूखल-मेखला सचमुच, स्थानीय यक्ष-यक्षी थे, यह महाभारत से भी विदित है।

ण् ा के समय एक यक्ष उनके रथ के अष्व के साथ था। बौद्ध साहित्य में चार
महाराज या बड़ े यक्षों की पूजा का प्रायः उल्लेख आता है। इन्हें एक साथ ’चातू महाराजिक देवा’ कहते थे। भरहुत की वेदिका पर इन्हें यक्ष ही कहा गया है। इन चार बड़ े देवताओं का सम्बन्ध चार दिषाओं
और पष्चिम में विरूपाक्ष। इन चारों देवताओं में कुबेर को यक्षों का अधिपति माना जाता था। कुबेर का ही वैश्रवण पांचिक और जम्भल नाम था। उसकी राजधानी अलका कैलास के पास

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS) Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
प्ैैछ;वद्धरू 2249.7382 द्य प्उचंबज थ्ंबजवतरू 6.939 द्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Email:- editorijrim@gmail.com, http://www.euroasiapub.org
;।द वचमद ंबबमेे ेबीवसंतसलए चममत.तमअपमूमकए पदजमतकपेबपचसपदंतलए उवदजीसलए ंदक निससल तममितममक रवनतदंसण्द्ध

212

स्थित थी। कुबेर की नगरी की वैभव अनेक प्रकार से कहा गया है। धन के देवता होने क े कारण कुबेर की पूजा का लोक व्यापी प्रचार था। आगे चलकर उसकी अनेक मूर्तियां मिली हैं। इनमें कुबेर की आकृति पगड़ी बांधे हुए तुंदिल सेठ के समान है।
कुबेर के नाम पांचिक का महायान बौद्ध धर्म में बहुत प्रचार हुआ। गंधार से मध्य एषिया
तक के क्षेत्र में पांचिक और उसकी पत्नी हारीती की मान्यता थी। हारीति के सम्बन्ध में महावंष में उल्लिखित है कि वह पाँच सौ यक्षों की माता थी। उसका मूल स्थान राजगृह था। महाभारत में राजगृह की प्रधान यक्षी जरा का उल्लेख आया है। गृहदेवी के रूप में वह राजगृह के घर-घर में पूजित थी।
बौद्ध धर्म में इसी देवी को हारीती कहा गया है। यह बच्चों का हरण कर लिया करती
थी, तभी उसका नाम जातहारिणी या हारीती पड़ा। जब बुद्ध राजगृह आये तो उन्हें लोगों से इसके बारे में पता चला। हारीती के मन में मातृ-स्नेह जागृत करने के भाव से बुद्ध ने उसके पुत्र को छिपा लिया। उचित समय जानकर बुद्ध ने उसे उपदेष दिया तभी से वह बच्चों की

इसकी पूजा का एक केन्द्र था। इसके बाद तो हारीती की पूजा गंधार प्रदेष में फैलती हुई मध्य एषिया तक छा गयी।
बौद्ध साहित्य यक्षों के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण जानकारी देता है। यक्ष और भूत बुरी

”

उनका रुधिर भी पीते हैं।

हुआ। यक्ष-मणिभद्र की पूजा विष्

उपासकों की श्रेणी द्वारा कराई गयी। संयुक्त निकाय में वर्णन है कि मगध में मणिमाल नामक यक्ष का चैत्य था। जो मणिभद्र ही जान पड़ता है।
बौद्ध एवं जैन साहित्य का अनुषीलन यह रहस्योद्घाटन करता है कि उत्तर भारत म ें यक्ष पूजा सर्वत्र प्रचलित थी। कुछ प्रमुख यक्ष अंबरदत्त, मणिभद्र, भंडिरा, सूलपाणि, सुरप्रिया, घण्टिका और पूर्णभद्र थे। प्रमुख यक्षियाँ कुन्ती, नट, भट्ट रेवती, तामपुरी, लोका, मेखला,

सम्बन्ध तंत्र से भी जुडा। इसका कारण सम्भवतः यक्षो
में इस तथ्य का पर्याप्त उल्लेख हुआ है।’

ही किया जा सकता है। प्रमाणिकता के साथ कुछ कह सकना असम्भव है। परन्तु इतना कहा जा सकता है कि बुद्ध-महाव
मानस का अंग बन चुकी थी। सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि मूर्तिकला में पुरातन मूर्तियाँ यक्षों की ही है। मथुरा की प्राचीनतम् मूर्तियाँ भी यक्षों की ही हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS) Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
प्ैैछ;वद्धरू 2249.7382 द्य प्उचंबज थ्ंबजवतरू 6.939 द्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Email:- editorijrim@gmail.com, http://www.euroasiapub.org (An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

213

अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के यक्ष अस्तित्व में थे
भावना वाले यक्ष थे, कुछ तटस्थ यक्ष थे। बुरे यक्षों के प्रभाव से बचने के लिए ही दीर्घनिकाय (आटानाटीय सुत्त) में एक रक्षा-मंत्र का वर्णन किया गया है, जिसका उच्चारण यक्ष, गन्धर्व आदि के बुरे प्रभाव से बचने में सक्षम माना जाता था। इसी तरह के मंत्रों की सूचना मिलिन्दपन्हो में भी उपलब्ध है। कुछ यक्षायतनों का भी उल्ल ेख है, जिनमें यक्ष-पूजा होती थी,

चैत्य, राजगृह में यक्ष मोग्गरपाणि का चैत्य, राजगृह के पास इन्द्रषैल यक्ष, राजगृह में जरा या हरीती का यक्षायतन।
इसके अतिरिक्त बौद्ध साहित्य से लोक देवताओं की अन्य विस्तृत सूची भी प्राप्त होती
है, जिसमें यक्ष, असुर गर्न्धव आदि का उल्लेख हुआ है। एक सूची सुत्तनिपात की निद्द ेस नामक व्याख्या में और दूसरी मिलिन्दपन्हो में वर्णित है। मिलिन्दपन्हो में इन देवताओं के मानने वाले आचार्यों के अनुयायियों को गण के नाम से सम्बोधित किया गया है। इससे स्वतः यह सिद्ध होता है कि इस तरह के कितने ही छोटे-छोटे देवता लोक में पूजित थे।
जैन साहित्यिक स्रोतों से भी यक्षों के बारे में पर्याप्त सूचनाएं प्राप्त होती हैं। कुमार स्वामी ने कहा है कि जैन धर्म और यक्ष-पूजा एक-दूसरे से सम्बन्धित है। यक्ष व्यन्तर देवताओं की श्रेणी में रखे गये हैं। इसमें यक्षों के अतिरिक्त पिषाच, भूत, राक्षस, किन्नर,

जैन देवत

और वैमानिक। भुवनवासी जैसा कि नाम से ही विदित है, एक स्थान पर निवास करने वाले, व्यन्तर या बाणमन्तर भ्रमणष् षीय नक्षत्रों से सम्बन्धित तथा वैमानिक स्वर्ग के देवता थे। प
थे। ऐसे ही मेलों को प्राचीन काल में मह के नाम से सम्बन्धित किया जाता था। जैन ग्रन्थ ण् ाायाधम्मकहा (ज्ञाताधर्मकथा) में इसी तरह के महों का उल्लेख किया गया है। जिनमें नाग, स्कंद, इन्द्र के महों के साथ-साथ यक्षमह का भी वर्णन आया है।
लोकदेवताओं और उनके महो की सूचना अन्य जैन ग्रन्थों से भी मिलती है। जैने ग्रन्थों
में यक्षों का क्रमषः उल्लेख उनकी लोकप्रियता को प्रमाणित करता है। देवताओं की एक अन्य सूची रायपसेणिय सुत्त में भी वर्णित है। जिसमें यक्षमह का परिगणन है। भगवती-सूत्र में षाली देवताओं के रूप में निरूपित किय गये हैं।
उत्तर और दक्षिण भारत से भी अनेक यक्ष-यक्षी प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। इनमें से कुछ ्रतिमाऐं प्राप्त हुई हैं। जिससे पता चलता
है कि यक्ष-पूजा का प्रसार व्यापक रूप से था। तमिलनाडू, आन्ध्रप्रदेष आदि यक्ष परम्परा के प्रमुख केन्द्र थे।
इसके अतिरिक्त कुछ जैन ग्रन्थ यक्ष-पूजा की आज्ञा नही देते हैं। यक्षों को कुदेव कहकर उनकी पूजा करने से रोका गया है। उन्हें अवन्दनीय कहा गया है। मोक्ष पाहुड़ की श्रुतसामरी टीका में रवि, चन्द्र, यक्ष त्रिपुरा-भैरवी को कुदेव की श्रेणी में रखा गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि यक्ष–पूजा में विभिन्न कालों के अनुसार चढ़ाव–उतार vkrs jgs ijUrq ;{k&iwtk ykdfiz;rk d s lkFk pyrh jgh] bl s bUdkj ugh fd;k tk ldrkA lEi.kZ Hkkjr e sa ;g fdlh u fdlh :Ik e sa fo|eku jgh gSA

xU/ko] vIljk] fdUuj ,oa fo|k/kj

cq) ijEijk d s io gh ykd e sa ;{k&iwtk ijEijk lo= O;kid :Ik l s ykdfiz; FkhA ikfy lkfgR; e sa bUg fof"k"ट गुणों से युक्त अर्द्ध–देव माना गया है। यत्र–तत्र इनके विषय में यह भी वर्णन मिलता है कि ये दूसरो को कष्ट भी पहुंचाते थे। परन्तु अधिकां"kr% ykxk sa e sa ;gh ekU;rk Fkh fd ;{k /kun vFkkZr _f) ,o fl)h inku dju okys gkrs gSA ikfy साहित्य में इन्हें मनुष्य का माँस खाते हुए दिखाया गया है। budk lEcU/k O;kf/k;k s l s Hkh स्थापित किया गया है। कष्टप्रद यक्षों से बचने के लिए वैश्रवण द्वारा मंत्र का निर्दे"k Hkh feyrk gSA oJo.k u ie[k ;{k&lsuk e sa bUn] lke] o#.k] iztkifr] ef.kHkn] vk.kod vkfn d s uke mfYyf[kr fd; s gSA Lej.kh; g fd v)nok s dh J.kh e sa ;{k&lEink; d s vUrxr xU/ko] fdUuj] feFkqu] ukx ,oa vIljk dh x.kuk cq) ,oa tu xzUFkk sa e sa dh x;h gSA oJo.k u महत्वपूर्ण यक्षों की श्रेणी में सोम को भी निर्दिष्ट किया है। सोम देवों को प्रिय था एवं गन्धर्व lke&j{kd FkA vr% vfHkO;fDr gkrh g fd xU/ko ;{kk sa dh J.kh e sa ifjxf.kr gSA lkFk gh ;{k vf/kifr dcsj dk vydkijh fuoklh gkuk ,oa xU/ko rEc: dk mudh lok e sa उपस्थित होना इस तथ्य की सम्पुष्टि करता है।

cq) er ikp idkj d s norkvk sa e sa *HkEenok* ;k fuEunok sa dk Hkh xg.k djrk FkkA bld vulkj ukx] lis.kZ] ;{k] vlj rFkk xU/kc ; HkEenok e sa vkrs gSA c) vkj ckf/klRo dh luk e sa mifLFkr jgus budk dk; crk;k x;k gSA cq)&dFkkvk sa e sa lHkk e sa cq|&;q= ctku okys ipkf"k[k xU/ko rFkk io fn"ाा के रक्षक धृतराष्ट्र के प्रचुर उल्लेखikIr gkrs gSA गन्धर्वो के स्वामी धृतराष्ट्र को महाराजा कहा गया है एवं शाक्यमुनि बुद्ध के जीवन के प्रत्येक egRoi.kZ ekM+ dj ckf/klRo ,oa c) d s ifr J)k lefir dju rFkk fo/u&ck/kkvk sa vkj [krjk sa dk nj dju d s fy, ifjpkjdk s lfgr mlds mifLFkfr n"kkbZ xbZ g tk s cq)&;x e sa xU/kok sa d s vfr"k; egRo dh |krd gSA

cq) ,oa tu ikfof/kd lkfgR; d s vu"khyu l s Kkr gkrk g fd c) d s vkxeu d s पूर्व ही लोक में शक्ति"kkyh ;{k] xU/ko] ,oa ukx dh mikluk ipfyr FkhA dnkfpr ykx Hk;o"k Hkh budh iwtk djrs jgs gkxsA xnHk uked ;{k dk eFkjk e sa vkrad FkkA ,lk उल्लेख मिलता है। भगवान् बुद्ध ने उसे को शान्त करके मथुरावासियों की रक्षा की थी।'' ब्रज d s db xko ;{k&iwtdk s d s ikphu dsUnz irhr gkrs gSA nh?kfudk; ¼vkVkukVh; lqÙk½ e sa ,d j{kk&e= dk fooj.k ikIr होता है जिसका उच्चारण यक्ष, गन्धर्व आदि के दुष्प्रभाव से बचने के लिए किया जाता था। निष्कर्षतः दो प्रकार के अस्तित्व वाले यक्ष, गन्धर्व समाज में iwftr FkA

संस्कृत बौद्ध साहित्य कुबेर का सम्बन्ध मणिभद्र धृतराष्ट्र का सूर्य, विरूढ़क का यम एवं fo:ik{k dk o#.k d s lkFk LFkkfir djrk gSA** /;krO; g fd xU/ko dk vFk lk;.k u l;

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS) Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
प्ैैछ;वद्धरू 2249.7382 द्य प्उचंबज थ्ंबजवतरू 6.939 द्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Email:- editorijrim@gmail.com, http://www.euroasiapub.org (An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

215

किया है एवं गन्धर्वों का अधिपति पूर्व दिषा का स्वामी है। अतः संस्कृत बौद्ध साहित्य में वर्णित

उद्घाटित होता है कि बौद्ध परम्परा में वैदिक-परम्परा के मिथकों को पूर्ण प्रश्रय दिया गया है। हॉपकिन्स ने भी बौद्ध धर्म में अर्न्तनिहित दिक्पालों की मान्यता को अंगीकार किया है। वस्तुतः बौद्ध-य ुग में गर्न्धव यक्ष के ही एक रूप माने गये थे। भगवद्गीता में देवपूजा
को सात्विक, यक्ष-राक्षस पूजा को राजस् तथा भूत-प्रेत पूजा को तामस् कहा गया है।

उथल-पुथल का रहा। इस काल में बौद्ध एवं जैन दो नवीन धर्मों का अभ्युदय हुआ। प्रारम्भिक जैन ग्रन्थों के अनुषीलन से ज्ञात होता है कि तीर्थंकरों के साथ ही यक्ष, यक्षियों, लक्ष्मी-सरस्वती, लोकपाल, कुबेर, गन्धर्व नाग आदि देवी-देवताओं को जैन देव-समूह में स्थान प्राप्त हो गया। कालान्तर में इन देवों के प्रतिमा लक्षणों का भी विकास हुआ।
जैन-मान्यता के अनुसार गन्धर्व व्यन्तर देवताओं की श्रेणी में आते हैं-’’व्यंतरा किन्नर

”

प्राप्त करने में सक्षम हैं एवं वे इसी पृथ्वी के खरभाग या उपरी स्तर के निवासी है। जैन-कला में तिर्थंकर प्रतिभा के साथ पार्ष्वचर के रूप में गन्धर्वों का अंकन मिलता है। जैन-ग्रन्थ
*”

पिषाच तथा अनेक आठ चैत्य-वृक्ष, अषोक, चम्पक, पुन्नाग, तुम्बुक, वट, पलास, तुलसी और कदम्ब का वर्णन प्राप्त होता है। इन्ही वृक्षों से पृथ्वी सारभूत रहती है। इन समस्त वृक्षों क े नीचे मूलभाग में चारू तोरणो से सुषोभित चतुर्मुखी जिन (तीर्थंकर) प्रत्येक दिषा में विराजमान

भी उल्लेख किया गया है। हाहानद, हुहुसंज्ञक, नारद तुबरू-तम्बुरू, वासव गन्धर्व, महास्वर, गीतरति, गीतयष एवं दैवत। जैन ग्रन्थों में किन्नर, किन्नरियों एवं गन्धर्वों के द्वारा दिव्य गीत गाने का भी वर्णन है। रायप-सेणिय सुत्त में किन्नरों को संगीत नृत्य नाटक एवं हास-परिहास में प्रिय कहा गया है। जैन साहित्य गन्धर्वों के साथ-साथ किन्नरों को भी नृत्य संगीत की

करने की अवधारण के कारण गन्धर्वों के साथ किन्नरों को भी संगीतज्ञ के रूप में अंकित किया गया।

जैनधर्म की भांति बौद्ध धर्म में भी नागपूजा का व्यापक उल्लेख प्राप्त होता है।

मिलता है वे महाक

ऐसा उल्लेख मिलता है कि गौतमबुद्ध को पृथ्वी पर जन्म लेने के लिए तुसित स्वर्ग में देवों ने प्रेरित किया था। महामाया देवी द्वारा सरोवर में स्नान करना और गर्भधारण करना तथा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS) Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
प्ैैछ;वद्धरू 2249.7382 द्य प्उचंबज थ्ंबजवतरू 6.939 द्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Email:- editorijrim@gmail.com, http://www.euroasiapub.org (An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

216

नवजात गौतम से सम्बन्धित आख्यान प्रमुख है। इन सभी जगहों में नाग की उपस्थिति और

अंग ुत्तर निकाय और दीर्घ निकाय ग्रन्थ

में अन्य देवताओं के साथ नाग भी वहाँ उपस्थित थे। इन नागों में एक प्रमुख नाम सुवर्ण प्रभास था जिसे नागराज एलपत्र का सलाहकार कहा गया है। बौद्ध साहित्य में उल्लेख मिलता है कि गौतमबुद्ध के गर्भ में आने की रात महामाया ने स्वप्न देखा कि चतुर्महाराजों ने आकर उन्हें पलंग सहित उठा लिया और सुन्दर जगह वृक्ष के नीचे सुला दिया। वहाँ इन चतुर्महाराजाओं की पत्नियाँ उपस्थित हुई और उन्होंने महामाया को अनोतत्त सरोवर में स्थान कराया और दैवीय वस्त्र पहनाये तथा उसके पष्चात् एक सोने के महल में ले जाकर एक पलंग पर सुला दिया। यहीं पर भावी गौतमबुद्ध ने एक सफेद हाथी के रूप में दाहिने पार्ष्व से गर्भ में प्रवेष किया। गर्भ में आने के पष्चात् उनकी देखभाल की इन चतुर्थहाराजों में एक महाराज नागराज विरूपाक्ष था जो पष्चिम दिषा का अधिपति माना जाता था।
नागों के महात्मा बुद्ध के जीवन की अनेक घटनाओं के साथ भी जोड़ा गया है। ललित विस्तार में लिखा है कि लुम्बिनी उपवन में महात्मा बुद्ध के जन्म के समय दो नागराज नन्द

जल से नहलाने में सहायता की। मज्झिम निकाय, महावस्तु, बुद्धचरित्र ग्रन्थों में भी नवजात गौतम के स्नान का वर्णन किया गया है।
र अनेक देव उपस्थित थे
जिसमें वरुण तथा नाजरागज सागर भी थे। उन्हांेने गौतम बुद्ध के प्रति श्रद्धा प्रदर्षित करन े हेतु सुगन्धित धूप के बादलों एव ं चन्दन की फुहारों का सृजन किया।
गौतमबुद्ध के जीवन की चतुर्थ महत्वपूर्ण घटना धर्म-चक्र प्रवर्तन की है। यह बौद्ध धम Z
के प्रचार-प्रसार से सम्बन्धित है। महावस्तु के अनुसार काषी में गौतम बुद्ध के धर्म चक्र प्रवर्तन

है। जिस धन की
धन पात्र को मिल सकता है। नागपूजा परम्परा से सम्बन्धित उद्यान में आयोजित होने वाली नाग मेला का उल्लेख मिलता है। गौतमबुद्ध जब काषी पहुंचे थे तो वे पहले दिन इसी उद्यान में विराम किया था।
अपितु बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में भी अपना बहुत योगदान प्रदान किया।
वाराणसी से सम्बन्धित दूसरा महत्वपूर्ण नागराज एलापत्र था। उसे सारनाथ में गौतम
बुद्ध का दर्षन किया था। नागराज एलापत्र तक्षषिला से सम्बन्धित था। इसका उल्लेख बौद्ध परम्परा में अधिक मिलता है। चीनी और तिब्बती स्रोतों से इस कथा का विवरण मिलता है। फाह्यिान जब बनारस मृगदाय में आया तो उसने उस स्थान को देखा जहाँ एलापत्र ने बुद्ध से पूछा था कि नाग योनि से मुक्ति कब होगी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS) Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
प्ैैछ;वद्धरू 2249.7382 द्य प्उचंबज थ्ंबजवतरू 6.939 द्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Email:- editorijrim@gmail.com, http://www.euroasiapub.org (An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

217

बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में नागों का भी बहुत अधिक योगदान था। गौतमबुद्ध ने

कन्ह गोतमक श्रीलंका के नागराज महोदर एवं चुलोदर काबुल घाटी के नागराज गोपाल और राजगृह के नागराज गिरिक का नाम प्रमुख है।
इन नाग राजाओं के बौद्ध धर्म में सम्मिलित किये जाने के सम्बन्ध में जो साहित्य एवं

ं के आठ नाम
मिलते हैं। कुषीनगर के मल्लों की स्वीकृति पर द्रोण ब्राह्मण ने बुद्ध की अस्थियों को आठ भागों में बांट दिया। जिसमें एक भाग देवताओं को दूसरा भाग नागों को और तीसरा राजवंषों को प्राप्त हुआ। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने भारत भ्रमण के समय अनेक कथा तथा स्थलों

”

निर्मित स्तूपों से सम्बद्ध थे।
बौद्ध जातकों में नागपूजा के अनेक वर्णन मिलते हैं। जिनसे बुद्ध कालीन समाज में
नाग पूजा की व्यापकता में संदेह नहीं रह जाता। बौद्ध जातकों में दुग्ध, खीर, मत्स्य, मांस,

इतना अधिक महत्व प्रदान किया गया है कि पूजार्थ नाग मूर्तियों के निर्माण की सम्भावना स्वाभाविक प्रतीत होती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

lanHkZ xzUFk lwph

1& okLno"kरण अग्रवाल, प्राचीन भारतीय लोकधर्म, पृष्ठ 127।
2& वही, पृष्ठ 127।
3& वही, पृष्ठ 128।
4& कुमार स्वामी, बुद्ध एण्ड गॉस्पेल आफ बुद्धिसिज्म, पृष्ठ 18।
5& **i.Mdk uke ;D[kk r flf) gkfjr;fD[k;kA
Rkp lrfg iÙkfg Qy ikif.k vkfndeAA** egko"k] 12-21A
6& भट्टाचार्य, बी0, दि इण्डियन बुद्धिस्ट आइकोनोग्राफी, पृष्ठ 379।
7& पाटिल, डी0आर0 कल्चरल हिस्ट्री फ्राम दि वायुपुराण, पृष्ठ 180, 195।
8& x.kLF; ef.kHknHkDr xHk lf[kr% HkxorkA
मनिभद्रस्य प्रतिमा प्रतिष्ठापयन्ति।
जे0ए0 बनर्जी, डेवलपमेंट आफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, पृष्ठ 97A
9& l;Dr fudk;] 1-10-4A
10& मोतीचन्द्र, सम एसपेक्ट्स आफ यक्ष कल्ट, बुलेटिन, आफ दि प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियम, बाम्बे, 1954, पृष्ठ 43।
11& egkHkkjr vkj.;dio] 83-22A
12& मिलिन्दपंह, वाडेकर संस्करण, पृष्ठ 190।
13& etenkj] vkj0lh0 fn fgLVh ,.M dYpj vkQ fn bf.M;न पीपुल, पृष्ठ 282।
14& कुमार स्वामी, यक्षास, पृष्ठ 26।
15& तिवारी, मारुतिनन्दन प्रसाद, खजुराहों का जैन पुरातत्व, पृष्ठ 36–37।
16& भगवती सुत्र 15, पृष्ठ 734।
17& अंगविज्जा, अध्याय 58, पृष्ठ 223–24।
18& vxoky okLno"kरण, प्राचीन भारतीय लोकधर्म, पृष्ठ 5।
19& mÙkjk/;;u l=] 111-14&18A
20& देसाई, पी0वी0, जैनिज्म इन साउथ सम जैन इपीग्राफ्स, पृष्ठ 43।
* विस्तृत विवरण के लिए दृष्टव्य डॉ0 कमले"ा दूबे, प्राचीन भारत में यक्ष पूजा, पृष्ठ 31–32
21& eykpkj] v/;k;&7] xkFkk 95A
22& , fMD"kujh vkQ dEifjfVo fjyhtu&,l0th0,Q0 c.MuA
23& दीर्घनिकाय : 2,पृष्ठ 254–57।
24& बरुआ बी0एम0 : बुक 2, जातक सीन्स, पृष्ठ 56–57।
25& दन्त नालिनाक्ष : गिलगिट मैनुस्क्रिप्ट्स, वाल्यूम–3, पार्ट–1,पृष्ठ 14–17।
26& सिंह अमरेन्द्र : प्राचीन भारतीय धर्म एवं कला में यक्ष, किन्नर एवं दिक्पाल, पृष्ठ 117।
27& Hk.Mkjdj] vkj0th0 % o"ानविज्म, शैविज्म एण्ड माइनर रेलिजियस सिस्टम्स, पृष्ठ 3।
28& सिंह, अमरेन्द्र : प्रा0भा0 धर्म एवं कला में यक्ष, किन्नर और दिक्पाल, पृष्ठ 120।
29& fofy;El ,e0,e0 % , lLdr bxfy"ा डिक्सनरी, पृष्ठ 906।
30& ljdkj] Mh0lh0 % LVMht bu nh fjftfy;l ykbQ vkQ ,fU"k;UV ,.M मेडिवल इण्डिया, पृष्ठ 238।
31& हापकिन्स : इपिक माइथालॉजी, पृष्ठ 152।
32& ;tUr lkfRodk noku ;{k j{kkfl jktlkA
irku Hkrx.kk"pkU; ;tUr rkelk tukA** &Hkxonxhrk&17-4
33& तिवारी, मारुति नन्दन प्रसाद – खजुराहों का जैन–पुरात्व, पृष्ठ 36–37।
34& vxfoTtk % देवता विजय, अध्याय – 51, पृष्ठ 204–6 उद्धृत सिंह अमरेन्द्र प्रा0भा0 धर्म एवं कला में यक्ष, किन्नर एवं दिक्पाल, पृष्ठ 127।
35& आचार्य उमा स्वामी : तत्वार्थाधिगम सूत्र (सं0जे0एच0जैनी) पृष्ठ 96–99।
36& flg vejUn % ikOHkk0 /ke ,o dyk e ;{k] fdUuj vkj fndiky] पृष्ठ 128।
* विस्तृत विवरण के लिए दृष्टव्य डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा, प्राचीन भारत में यक्ष पूजा, पृष्ठ 87–90।
37& vxoky] okLno"kरण, भारतीय कला, पृष्ठ 284।
38& ,d ip uo p Q.kk lik"o lIre ftuA
–भट्टाचार्य, बी0सी0– दि जैन आइकोनोग्राफी लाहौर, 1993, पृष्ठ 60।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

39& eFkjk lxgky; l0& 2502A
40& mÙkjijk.k] 73] 139&40A
41& अंगुत्तर निकाय खं0–1, पृष्ठ 210, 2-130] 3-348] 4-132] 5&138A
42& दीघ निकाय सं0– पृष्ठ 161।
43& विनय पिटक, पृष्ठ 109।
44& जातक खण्ड 1, पृष्ठ 49।
45& nh?k fudk;] 2-202] 3-194A
46& uUn miuUnk p ukxjktkuk xxu ry m) dk;k fLFkRokA
शीत–उष्ण द्वे वारि धारेडभिनिर्मित्वा बोधिसत्व स्नायपतः स्म।।
&yfyr foLrkj Hkkx&1] 11-21–22, पृष्ठ 82–83
47& मज्झिम निकाय, खण्ड–तीन, पृष्ठ 23–34।
48& महावस्तु, भाग–2, पृष्ठ 12-3A
49& c) pfjr] 1-27]35 ,o 38A
50& yfyr foLrkj] [k.M&1] 11-9&2A
51& eYy"k[kj] th0ih0& fMD"ानरी आफ पाली प्रापर नेमा खण्ड–2, पृष्ठ 484।
52& ek"ल, जे0, ए गाइड टु साँची, पृष्ठ 81-161A
53& QX;lu] t0 Vh ,.M liUV of"पि, पृष्ठ 115, प्लेट–76।
54& महावस्तु, खण्ड–3, पृष्ठ 383।
55& lÙkfuikr Vhdk] [k.M&1] iष्ठ 34।
56& विनयपटिक खण्ड–2, पृष्ठ–109, धम्मपद कथा, खण्ड–3, पृष्ठ 230–236।
57& दिव्यावदान, पृष्ठ 50।
58& egko"k] 34-68] nhio"k] 21-34A
59& वी0एस : सी0यू0 की, बुद्धिस्ट रिकार्ड्स आफ द वेस्टर्न बतर्ड, खण्ड–2, भाग–1, पृष्ठ 93।
60& दिव्यावदान, पृष्ठ 348।
61& tkrd] 2] iष्ठ 498।